नवभारत 8/जुलाई/2009

जीवित है 'गंडा बांधने' की परंपरा

✦ कला प्रतिनिधि

रायपुर. इस दौर में जब सब कुछ 'पेनड्राइव्ह' फार्म में लोगों को चाहिए, दर्जेदार गजल गायकी की खातिर समय निकालना कठिन लगता है, लेकिन राजधानी का एक प्रतिष्ठित सांगीतिक परिवार ऐसा भी है जिसने अपने बच्चों को गंडा-बंधवाकर सिलसिलेवार तालीम देने का साहस जुटाया है. अश्विनी वर्मा नामक दर्जेदार गजल गायक ने इस परिवार के पद्मेश और रत्नेश दुबे को गंडा बांधा है.

तबला वादन के क्षेत्र में सोहन दुबे प्रदेश में ख्यात हस्ती है. उन्होंने अपने छोटे भाई महेश के पुत्रों- पद्मेश और रत्नेश में स्वाभाविक तौर पर पनपती गायन रूचि देखकर उन्हें गजलों से जोड़ने का मन बनाया. जाहिर है इस हेतु उनकी नजर में ऐसा गवैया होना था जो गजलों की बहुमूल्य विरासत से नाता रखता हो. उनके मुताबिक, 'इस हेतु भिलाई के अश्विनी कुमार वर्मा से बेहतर कौन होता जो दो सौ साल पुरानी परंपरागत गजल गायिकी को अपने बलबूते पर जीवित रख हैं.' श्री दुबे खुलासा करते हैं, 'श्री वर्मा के पिता स्व. रतनचंद वर्मा से वे जुड़े थे, उनके घर की अनेक बैठकों के साक्षी रहे. स्व. वर्मा के साथ तबला संगति का भी उन्हें सौभाग्य मिला. खुद उन्होंने गंडा बंधवाकर तबला सीखा है. इसलिए ऐसी शिक्षा का महत्व जानते हैं. वे प्रसन्न है कि कठिन और दुर्लभ गायकी का नाता अपने परिवार से जोड़ने की राह खोल पाए.'

> **दुर्लभ गायकी को बचाने की कसक**

पद्मेश और रत्नेश के पिता- महेश दुबे कहते हैं घर में गजलों का माहौल देखकर बच्चे गजल गायकी की तरफ बढ़े. देखा सीखी गाने की उनकी रूचि को मुकम्मिल आधार देना गंडा बंधवाने का कारण है. अश्विनी वर्मा जैसे गुणी कलाकार का साथ उनके पुत्रों को मिला इसे वे खुश किस्मती समझते हैं.

पद्मेश और रत्नेश इस समय क्रमशः कक्षा 9 वीं और 7 वीं में पढ़ रहे हैं. दोनों को उस्ताद अहमद हुसैन मुहम्मद हुसैन के साथ भी मंच पर गाने का अवसर मिला है. आज गुरू पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर इन नन्हें शिष्यों ने अपने गुरू की वंदना करते उनसे इस कठिन इम्तिहान में सफल होने का आशीर्वाद मांगा. बताते चलें, अश्विनी वर्मा आकाशवाणी, दूरदर्शन के ए- ग्रेड गजल गायक है. 'शाम चौरासी घराने की गायकी के वे ऐसे वारिस है जो अब तेजी से खत्म होने के कगार पर है. अविभाजित भारत में पंजाब इसका केन्द्र रहा है. फिलहाल पटियाला शाम चौरासी की बुनियाद को समेट कर गजल गाने वाले उंगली में गिन लें इतने शेष हैं. लाहौर (पाकिस्तान) से निकला यह सोता वहां भी सूखने लगा है. आज सायं महफिल रंगने के उपरांत श्री वर्मा ने नवभारत को बताया इन दोनों बच्चों में प्रतिभा है. उन्हें बच्चों से अधिक माता-पिता के सहयोग की जरूरत है. इस परिवार में गुणवत्ता समझने की तड़प है इसलिये सफलता की उम्मीद उनको है.'

क्या है गंडा बांधना

पुराने दौर में गुरू-शिष्य परम्परा से संगीत की तालीम लेने से पहले गुरू शिष्य को गंडा बांधते थे. इसमें गुरू अपने शागीर्द से जी तोड़ मेहनत करने का वचन लेते थे. योग्य चेला की कलाई पर गुरू प्रतीकात्मक (धागा) बांधते थे जो चेलों का उस मिशन के प्रति ईमानदार रहने सचेत करता था. गुणी गवैये वर्मा जल्दबाजी के युग में 'गंडा बंधन' कितना तर्क सामत है? इस सवाल के जवाब में कहते हैं 'निष्ठा व समर्पण बनाए रखना शिष्यों के हाथ में है, तालीम देने का यह एक पुराना तरीका था. इसका महत्व जग जाहिर है. यदि गंभीरतापूर्वक सबक ग्रहण करना है तो इसकी शरण में जाना ही होगा.'